

---

# Durga Stotram

---

## दुर्गास्तोत्रम्

---

### Document Information



---

Text title : durgAstotram from Bharatamanjari of Kshemendra

File name : durgAstotramBM.itx

Category : devii, kShemendra, stotra, durgA, devI

Location : doc\_devii

Author : Kshemendra

Description/comments : kAvyamALA 65. Bharatamanjari

Latest update : October 15, 2022

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 15, 2022

*sanskritdocuments.org*

---



---

Durga Stotram

---

दुर्गास्तोत्रम्

---



दुर्गसंतारिणीं दुर्गां तदा स शरणं गतः ।  
महेन्द्रोपेन्द्रभगिनीं दिव्यैस्तुष्टाव नामभिः ॥ १ ॥  
नौमि कंसासुरैश्वर्यतमःपटलचन्द्रिकाम् ।  
पूर्णचन्द्राननां देवीं दुष्टसंमोहनक्षमाम् ॥ २ ॥  
दीप्तशूलप्रभाजालभीषणां ललिताकृतिम् ।  
वेल्लद्विषोल्बणव्यालामिव चन्दनवल्लरीम् ॥ ३ ॥  
महिषन्यस्तचरणां श्यामां हारविभूषिताम् ।  
सकालियहृदां फेनहासिनी यमुनामिव ॥ ४ ॥  
पाणिसंसक्तभुजगाभोगनीलासिवल्लरीम् ।  
एकपद्मोदरोद्गच्छदलिमालामिवाजिनीम् ॥ ५ ॥  
मयूरपक्षाभरणैः शबलैर्मैचकप्रभैः ।  
सेवितां प्रावृषमिव स्फुरदिन्द्रायुधैर्घनैः ॥ ६ ॥  
करालकेशविस्फारशुद्धसंचारलालसाम् ।  
हिमाद्रिशिखरोद्भूतां कालागुरुलतामिव ॥ ७ ॥  
कवीन्द्रमानसावासराजहंसीं सरस्वतीम् ।  
विचित्रमधुरोदारशब्दां चारुपदक्रमाम् ॥ ८ ॥  
संसारमरुसंतापनिर्वापणसमुद्यताम् ।  
संवित्समरसानन्दसुधास्यन्दतरङ्गिणीम् ॥ ९ ॥  
रणसंरम्भसंभारगम्भीरारम्भविभ्रमाम् ।  
निशुम्भशुम्भावष्टम्भभीतसंभावितामराम् ॥ १० ॥  
संध्यामवन्ध्यां विन्ध्याद्रिवासिनीं वासवानुजाम् ।  
शशिखण्डशिखण्डाङ्गां मुण्डमण्डलमण्डिताम् ॥ ११ ॥

फुल्लोत्पलवनश्यामां फुल्लोत्पलविलोचनाम् ।  
 गम्भीरनाभिकुहरामिभकुम्भनिभस्तनीम् ॥ १२ ॥  
 धन्यां कात्यायनी चण्डां चामुण्डां खण्डिताहिताम् ।  
 शर्वाणी शर्वरीं शर्वा सिद्धगन्धर्वसेविताम् ॥ १३ ॥  
 कालसंकर्षिणीं घोरां त्रिजगरामलालसाम् ।  
 कमलासनकङ्कालमालाकलितशेखराम् ॥ १४ ॥  
 शिवां शिवप्रदां शान्तां शिवकान्तां शताननाम् ।  
 त्रिनेत्रां सौम्यवदनां मदनारिमदप्रभाम् ॥ १५ ॥  
 स्फीतफेनसुधाम्भोधिदुकूलां रत्नमेखलाम् ।  
 करकलितहेमाद्रिमातुलङ्गांशुपिङ्गलाम् ॥ १६ ॥  
 अक्षसूत्रीकृतावृत्तनक्षत्रमणिमालिकाम् ।  
 पाणिसक्तसुधाम्भोधिपूर्णब्रह्माण्डकपराम् ॥ १७ ॥  
 संवित्प्रकाशविषदव्याकोशाकाशदर्पणाम् ।  
 शेषादिकुलभोगीन्द्रहारकेयूरकङ्कणाम् ॥ १८ ॥  
 तारकामौक्तिकस्मेरशशिमार्तण्डमण्डलाम् ।  
 त्रिशृङ्गरत्नशैलेन्द्रविटङ्कमुकुटोज्ज्वलाम् ॥ १९ ॥  
 कल्लोललोलखःसिन्धुधवलोष्णीषभूषिताम् ।  
 सेन्द्रायुधक्षयाम्भोदमायूरच्छत्रविभ्रमाम् ॥ २० ॥  
 कन्दाग्रकुण्डलितनाभिमृणालदण्ड  
 हृत्पुण्डरीकनिबिडांमृतपानशौण्डाम् ।  
 भृङ्गाङ्गनामिव सदोदितनादशक्ति-  
 संवेद्यवेद्यजननी जननीं प्रपद्ये ॥ २१ ॥  
 इति भारतमञ्जर्यां क्षेमेन्द्रविरचितं दुर्गास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।  
 हरिवंश बाणयुद्धम् श्लोकानि १३१३-१३३३



*Durga Stotram*

pdf was typeset on October 15, 2022



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

